-: पंचम अध्याय :-

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में संवाद तथा भाषा - शैली

पंचम अध्याय

"'गुनाहों का देवता' उपन्यास में संवाद तथा भाषाशैली"

उपन्यास के तत्वों में तीसरा महत्वपूर्ण तत्व संवाद है। इसका स्वरूप इतना वैविध्यपूर्ण रहा है कि, आजतक उसे कोई भी परिभाषा में बध्द करने में सफल नहीं हो सका है। फिर भी प्रचलित मतों के आधारपर वर्णनात्मक कृति में पात्रों की बातचीत को हम कथोपकथन या संवाद कह सकते हैं। प्रारंभिक उपन्यासों में कथोपकथन का वह रूप देखने को नहीं मिलता था जैसा कि, आज है। आज के उपन्यासों के संवादों में स्वाभाविकता को देखा जा सकता है जब कि, आरम्भिक उपन्यासों में नाटकीयता दिखाई देती थी।

"कथोपकथनों के द्वारा कुछ विचारों को सजीवता देने में सरलता पड़ती है। नाटकों में जो वस्तु अभिनय द्वारा व्यक्त होती है, उपन्यास में वह बहुत-कुछ कथोपकथनों के द्वारा लायी जाती है।" [१]

उपन्यास में कथोपकथन एक अहं भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक उपन्यासकार के संवाद चयन के पीछे उसका अपना एक निश्चित उद्देश्य होता है। संवाद चयन के कई उद्देश्य माने जाते है --

१) कथानक का विकास करना।

२) पात्रों की व्याख्या करना।

३) लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करना।

इन कथोपकथनों के द्वारा ही उपन्यासकार दृश्यों में सजीवता लाता है और कथानक का विस्तार करता है। इन्हीं के माध्यम से अपनी कृति के पात्रों की व्याख्या करता है। उपन्यासकार के द्वारा आयोजित उचित, स्पष्ट, सजीव एवं सरस कथोपकथन पात्रों

---

१ डा. प्रतापनारायण टण्डन -'हिंदी उपन्यास कला'- पृ. २१९।

के चरित्र को उजागर करने में सहायक होते हैं। लेखक इन कथोपकथनों के माध्यम से अपने पात्रों के जरिए अपने उद्देश्य की पूर्ति तक पहुँचने का प्रयास करता है। इसलिए सिर्फ पात्रों की बातचीत प्रस्तुत करना, यही उपन्यासकार का उद्देश्य नहीं होता, बल्कि पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को प्रस्तुत करना यह भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहता है।

आलोच्य उपन्यास 'गुनाहों का देवता' के लेखक डा. धर्मवीर भारती जी ने अपने उपन्यास में जो संवाद चयन किये हैं, उसके पीछे भी उनके कई उद्देश्य रहे हैं। उन्होंने कई कथोपकथनों के जरिए घटनाओं और दृश्यों में सजीवता लायी हैं। कई घटनाओं का दो पात्रों के संवादों के द्वारा संकेत भी प्रस्तुत किया है। जैसे बिनती अपनी शादी के लिए गाँव से आ रही है यह बात डा. शुक्ला और सुधा के निम्नलिखित कथोपकथन के जरिए मालूम हो जाती है --

> "कुछ नहीं, १० को कॉन्फ्रेन्स है और १४ को तुम्हारी बुआ आ रही है।"
> "बुआ आ रही हैं, और बिनती भी आयेगी ?"
> "हाँ, उसी को तो पहुँचाने आ रही है।" [१]

इस उपन्यास के कथोपकथनों के द्वारा लेखक ने उपन्यास में स्वाभाविकता, रोचकता उत्पन्न की है। इन्हीं की वजह से कथानक गतिशील बन जाता है। उपन्यास में कई जगहोंपर पात्रों की मानसिक, आन्तरिक विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए भी कथोपकथनों का प्रयोग किया गया है। चन्दर के कॉन्फ्रेन्स जाने और जल्दी न लौटने, साथ ही खत भी न लिखने की वजह से सुधा का चन्दर को कोसना, [२] फिर पम्मी के चले जाने के बाद खुद को कोसना [३], सुधा की शादी के बाद चन्दर का आईने के सामने वक्तव्य [४] आदि कई घटनाओं में लेखक ने पात्रों का आन्तरिक विश्लेषण किया है।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ५४।
२ वही वही पृ. ७१-७२।
३ वही वही पृ. ७८-७९।
४ वही वही पृ. २९०-२९४।

डा.पुष्पा वास्कर ने उनके संवादों के बारे में लिखा है --"'गुनाहों का देवता' का लेखक संवाद लिखने की कला अच्छी तरह जानता है। इस उपन्यास में कथोपकथन के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व के साथ-साथ नाटकीयता का भी सृजन हुआ है।" १

इस प्रकार इस उपन्यास में पात्रों के चरित्र-चित्रण को सामने रखकर लिखे गये ये कथोपकथन अत्यंत सजीव, रोचक, पात्रानुकूल बन गये हैं।

कथोपकथन में निम्नलिखित गुण होना आवश्यक है --

(१) उपयुक्तता - कथोपकथन में उपयुक्तता यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण गुण है। ये कथोपकथन घटनाओं, अवसर तथा वातावरण के लिए भी अत्यंत उपयुक्त होने चाहिए।

(२) स्वाभाविकता - कथोपकथन अत्यंत सहज एवं स्वाभाविक होने चाहिए जिससे उपन्यास में सहजता आ जाती है।

(३) संक्षिप्तता - लम्बे-चौड़े कथोपकथन पाठकों को बोझिल बना देते है, पाठक उब जाते हैं इसलिए उपन्यास में कथोपकथन संक्षिप्त एवं चुटीले होने चाहिए जिससे पाठक आरंभ से अंत तक उपन्यास को रूचि से पढ़ते हैं। इसलिए संक्षिप्त कथोपकथन प्रभावोत्पादक होते हैं।

(४) उद्देश्यपूर्णता- कथोपकथनों के चयन के समय लेखक को अत्यंत सावधान रहना चाहिए क्योंकि अनावश्यक या उद्देश्यरहित कथोपकथन फीके और नीरस लगते हैं।

(५) सम्बध्दता - जिन कथोपकथनों का चयन उपन्यासकार ने किया है, वे कथानक के साथ सम्बध्द होने चाहिए। "कथोपकथन के माध्यम से उपन्यासकार जिस बात को कह रहा हो या कहना चाहता हो उसमें कथानक तथा पात्रोंसे किसी-न-किसी प्रकार का प्रत्यक्ष पारस्परिक सम्बन्ध अवश्य होना चाहिए।" २

---

१ डॉ.पुष्पा वास्कर -'धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'- पृ.१४०

२ डा.प्रतापनारायण टण्डन -'हिन्दी उपन्यास कला'- पृ.२२३।

(६) अनुकूलता — कथोपकथन पात्रों के स्वभाव के अनुकूल होने चाहिए। यदि एक ओर कथोपकथन का पात्रों के स्वभाव से वैशाम्य नहीं होना चाहिए तो दूसरी ओर उसे पात्रों के सामाजिक, बौध्दिक और सांस्कृतिक स्वरुप के अनुकूल भी होना चाहिए।[१] इसी से पात्रों के चरित्र-चित्रण में उपन्यासकार को सहायता मिल सकती है।

(७) मनोवैज्ञानिकता — यह प्रवृत्ति आधुनिक काल के उपन्यासों में अधिकतर पायी जाती हैं। आधुनिक उपन्यासों में पात्रों के मनोविश्लेषण के लिए मनोवैज्ञानिक कथोपकथनों का चयन किया जाता है। इससे उपन्यास की कलात्मकता में वृध्दि हो जाती है।

(८) भावात्मकता — भावात्मक कथोपकथन उपन्यास को और प्रभावशाली बनाने में सहायता करते हैं। इससे उपन्यास में सरसता, काव्यात्मकता आ जाती है।

इन्हीं गुणों के आधारपर धर्मवीर भारती जी उपन्यास 'गुनाहों का देवता' के संवादों को हम निम्नलिखित दृष्टि से परख सकते हैं --

१) उपयुक्तता -- धर्मवीर भारती जी ने अपने 'गुनाहों का देवता' में जिन संवादों का चयन किया है वे सभी उपन्यास में घटित घटनाओं, अवसर और वातावरण के अनुकूल ही हैं - जैसे --

"लो चन्दर, अब इसे दुलार कर लो तो अभी गुरगुराने लगे। बिल्ली कहीं की।" सुधा ने उसे हल्की-सी थपत मारकर कहा। बिनती का मुँह अपने हथेलियों में लेकर अपने मुँह के बहुत पास लाकर बिनती की आँखों में आँख डालकर कहा --"पगली कहीं की, आँसू का खजाना लुटाती फिरती है।"[२] इस कथोपकथन में हम वातावरण के लिए उपयुक्तता पाते हैं।

---

१ डा. प्रतापनारायण टण्डन -'हिन्दी उपन्यास कला'- पृ. २२३।

२ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' पृ. १२३।

"बस ! बस !" चन्दर ने अपने हाथ से बिनती का मुँह बन्द करते हुए कहा.. ..."सुधा की बात मत करो, तुम्हारी कसम है । जिन्दगी के जिस पहलू को हम भूल चूके हैं, उसे कुरेदने से क्या फायदा ?"

"अच्छा, अच्छा !" चन्दर का हाथ हटाकर बिनती बोली --"लेकिन पम्मी को अपनी जिन्दगी से हटा दो ।"

"यह नहीं हो सकता बिनती !" चन्दर बोला -"और जो कहो वह मैं कर दूँगा । हाँ, तुम्हारे प्रति आज तक जो भी दुर्व्यवहार हुआ है, उसके लिए मैं तुमसे क्षमा माँगता हूँ ।" इस कथोपकथन के जरिये ही हम समझ जाते हैं कि, चन्दर बिनती के प्रति अपने मन में क्या भावना रखता है । इसलिए यह वातावरण की दृष्टि से उपयुक्त कथोपकथन साबित होता है । इसी प्रकार गेसू और सुधा, सुधा और चन्दर, सुधा और बिनती, पम्मी और चन्दर आदि के कई उपयुक्त कथोपकथनों का प्रयोग इस उपन्यास में किया है ।

(२) स्वाभाविकता -- सहज, स्वाभाविक कथोपकथनों के जरिए ही उपन्यासकार भारती जी ने हमें आरंभ से अंत तक उपन्यास का पठन करने के लिए मजबूर कर लिया है । सभी कथोपकथन पात्रों के आवश्यकता के अनुसार आ गये हैं । जैसे गेसू और सुधा के निम्नलिखित संवाद में हम कॉलेज के युवतियों के योग्य या स्वाभाविक गुण देखते हैं --

"अरे अब ऐसी भोली नहीं हो रानी तुम ! ये शबाब, ये उठान और ब्याह नहीं करेंगी, जोगन बनेंगी ।"

"अच्छा चल हट बेशरम कहीं की, खुद ब्याह करने की ठान चुकी है तो दुनिया-भर को क्यों तोहमत लगाती है ।"

"मैं तो ठान ही चुकी हूँ, मेरा क्या ! फिक्र तो तुम लोगों की है कि ब्याह नहीं होता तो लेटकर बादल देखती हैं ।" गेसू ने मचलते हुए कहा ।" [२]

पम्मी और चन्दर के निम्नलिखित संवाद से हम पम्मी के असफल शादी

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २६४ ।

२ वही वही पृ. ३८ ।

की बात जान जाते है । इसलिए उसका इस प्रकार का कथन उसके लिए स्वाभाविक ही है --

"मिस्टर कपूर, आप अविवाहित है ?"

"जी हाँ ?"

"और विवाह करने का इरादा तो नहीं रखते ?"

"नहीं ।"

"बहुत अच्छे । तब तो हम दोनों की निभ जाएगी । मैं शादी से बहुत नफ़रत करती हूँ ।" [१]

(३) संक्षिप्तता - संक्षिप्त कथोपकथन पाठकों की रोचकता को बनाये रखते हैं। भारती जी ने भी कई जगहोंपर पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए संक्षिप्त कथोपकथनों का चयन किया है जिससे पाठक रुचि के साथ उपन्यास को आरंभ से अंत तक पढ़ लेता है । जैसे -- गेसू और सुधा का यह संवाद --

"सुधी, तुझसे एक बात पूछूँ !

" हाँ ।"

"अच्छा जाने दे ।"

"पूछो न !"

"नहीं, पूछना क्या खुद जाहिर है ।"

"क्या ?"

"कुछ नहीं ।"

"पूछो न ।" [२]

इस कथोपकथन से कौतुहल में वृध्दि भी होती है कि, गेसू क्या पूछना चाहती है ।

चन्दर उठा और सोचने लगा तो सुधा बोली -- "कल आओगे कि नहीं ?"

"क्यों नहीं आऊँगा ?" चन्दर बोला ।

"मैंने सोचा शायद अभी दूर होना चाहते हो ।" एक गहरी साँस लेकर सुधा बोली और पंखे की ओट में आँसू पोंछ लिये ।" [३]

---

१ डॉ. धर्मवीर भारती-'गुनाहों का देवता'- पृ. २४-२५ ।

२ वही वही पृ. ६१ ।

३ वही वही पृ. १७८ ।

इस एक ही वाक्य में सुधा के दिल की सारी कसक, सारा दुःख हम देख सकते हैं। एक ही वाक्य में बहुत बड़ा प्रभाव डाल दिया है।

(४) उद्देश्यपूर्णता -- संवाद चयन करते वक्त उपन्यासकार भारतीजी ने कई उद्देश्यों को सामने रखा है। जब सुधा की शादी के बाद चन्दर में परिवर्तन आ गया था तब गेसू के साथ उसकी मुलाकात उसे सही रास्ते पर ला देती है। जैसे --

"बहुत धोखा दिया गया आपको!"

"छिः! ऐसी बात नहीं कहते चन्दर भाई! कौन जानता है यह अख्तर की मजबूरी रही हो! जिसको मैंने अपना सिरताज माना उसके लिए ऐसा ख्याल भी दिल में लाना गुनाह है। मैं इतनी गिरी हुई नहीं कि यह सोचूँ कि उन्होंने धोखा दिया।"[१]

चन्दर की जिन्दगी बदलनेवाला यह कथोपकथन साबित होता है।

चन्दर द्वारा अंत में बिनती को अपनाये जानेवाली महत्वपूर्ण घटना को भी लेखक ने कथोपकथन के जरिये ही प्रस्तुत किया है --

"चुप हो जाओ रानी! मैं अब इस तरह कभी नहीं करूँगा - उठो! अब हमीं दोनों को निभाना है बिनती!"[२]

(५) सम्बध्दता -- सभी कथोपकथन उपन्यास के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए ही लिखे जाते हैं, ऐसी बात नहीं। कभी कभी, कथोपकथन उपन्यास की घटनाओं के संकेतार्थ भी प्रस्तुत किये जाते हैं, साथ ही पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी कथोपकथन सहायक होते हैं। उनका सिर्फ उद्देश्य से ही ताल्लुक नहीं होता। जैसे बिनती और चन्दर का यह संवाद उन दोनों की भावुकता को चित्रित करता है ---

"उठ पगली, हमें तो समझाती है, खुद अपने-आप पागलपन कर रही है।" चन्दर ने रूँधे गले से कहा।

बिनती उठकर एकदम चन्दर की गोद में छिप गई और दर्दनाक स्वर में बोली -- "हाय चन्दर - अब ... क्या... होगा?"[३]

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' पृ. २६९-२७०।

२ वही वही पृ. ३५१।

३ वही वही पृ. १८४।

कथानक से सम्बध्द होने के बावजूद भी यह सिर्फ पात्रों के चरित्र को विश्लेषीत करता है।

पम्मी और चन्दर का यह कथोपकथन हमें यह सूचित करता है कि, चन्दर के दिल में पम्मी के लिए अब कोई जगह नही है और पम्मी कभी वापस नही आयेगी ---

"मैं लखनऊ जा रही हूँ कपूर।"

"कब, आज ?"

"हाँ, अभी कार से।"

"क्यों ?"

"यों ही, मन ऊब गया। पता नहीं, कौन-सी छाँह मुझपर छा गयी है। मैं शायद लखनऊ से मसूरी चली जाऊँ।" १

(६) पात्रानुकुलता -- पात्रों के स्वभाव, परिस्थिति के अनुकूल संवाद लिखना यह तो धर्मवीर भारतीजी की एक महत्वपूर्ण विशेषता ही रही है। उन्होंने अपने उपन्यास में बुआजी के गँवार संवाद, हसरत के बच्चों के अनुकूल, बिनती, सुधा, गेसू के युवतीयों के अनुकूल संवाद हम देखते हैं।

जैसे -- हसरत और चन्दर :

चन्दर ने उसे गोद में उठाकर पास बिठा दिया -"लो हलुआ खाओ हसरत।" हसरत ने सिर हिला दिया और बोला -"गेसू ने कहा था जाकर चन्दर भाई से हमारा आदाब कहना और कुछ खाना मत। हम खायेंगें नहीं।"

चन्दर बोला, "हमारी भी नमस्ते कह दो उनसे जाकर।"

हसरत उठ खड़ा हुआ -"हम कह आयें।" फिर मुड़कर बोला -"आप तब तक हलुआ खतम कर देंगे ?" २

चन्दर और बुआजी के संवाद में भी बुआ जी के गाँव से आने की वजह से उनके लिए अनुकूल ग्रामीण भाषा हम उनके संवादों में देख सकते हैं ---

"अच्छा, अच्छा भइया बइठो, तू तो एक दिन अउर आये रह्यो, बी.ए. में पढत हौ सुधा के संगे।"

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.२८०।

२ वही वही पृ.१२९।

"नहीं बुआ जी, मैं रिसर्च कर रहा हूँ।"
"वाह, बहुत खुशी भई तोको देख के।" [१]

इस प्रकार अन्य भी कई कथोपकथन पात्रों के अनुकूल बन पड़े हैं।

(७) मनोवैज्ञानिकता -- मनुष्य के मन का विश्लेषाण करना तो कठिन बात है परंतु पात्रों के बातचीत के जरिए हम उनके मन की गहराइयाँ नापने की कोशिश जरूर कर सकते हैं। भारती जी ने अपने उपन्यास में कई जगहोंपर मनोवैज्ञानिक कथोपकथनों का प्रयोग कर पात्रों के अंर्तमन को पाठकों के सम्मुख खोलकर रख दिया है।

"क्यों कविता में भी तबीयत नहीं लगती ? ताज्जुब है गेसू के साथ बैठकर तुम तो कविता में घण्टों गुजार देती थी।" चन्दर बोला।
"उन दिनों शायद किसी को प्यार करती रही होऊँ तभी कविता में मन लगता था।" सुधा उस दिन की पुरानी बात याद करके बहुत उदास हँसी हँसी - "अब तबीयत नहीं लगती। बड़ी फीकी, बड़ी बेजान, बड़ी बनावटी लगती हैं ये कविताएँ, मन के दर्द के आगे सभी फीकी हैं।" [२]

उपर्युक्त संवाद में हम जान जाते हैं कि, कितनी गहरी ठेस सुधा के मन को लगी हैं। इसी प्रकार बर्टी की भावुकता एवं विक्षाप्त स्थिति के माध्यम से बर्टी का चरित्र उभरने लगता है --

"उसने कहा -"ये गुलाब सार्जेण्ट से ज्यादा प्यारे है, फिर इन्हीं गुलाबों पर नाचती रही और सुबह होते ही इन्हीं फूलों में छिप गयी। तुम्हें सुबह किसी फूल में तो नहीं मिली ?"

"उहुँक, तुम्हें तो किसी फूल में नहीं मिली।" बर्टी ने बच्चों के से भोले विश्वास के स्वरों में कपूर से पूछा।" [३]

इसी प्रकार चन्दर के आईने के सामने का अर्न्तन्द्वन्द्व भी उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषाण करता है --

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ८६।
२ वही वही पृ. १४२।
३ वही वही पृ. ३०।

चन्दर तड़प उठा, पागल-सा हो उठा। कन्धा झँझक कर बोला --
"कौन है पापी ? मैं हूँ पापी। मैं हूँ पतित ? गलत। मुझे तुम नहीं समझाते। मैं चिर पवित्र हूँ। मुझे कोई नहीं जानता।"

"कोई नहीं जानता। हा, हा!" प्रतिबिंब हँसा - "मैं तुम्हारी नस-नस जानता हूँ। तुम वही हो न जिसने आज से डेढ़ साल पहले सपना देखा सुधा के हाथ से लेकर अमृत बाँटने का, दुनिया को नया संदेश देकर पैगंबर बनने का, नया संदेश। खूब नया संदेश दिया मसीहा। पम्मी.... बिनती.... सुधा.... कुछ और छोकड़ियाँ बटोर ले। चरित्रहीन।"[१]

(८) भावात्मकता - उपन्यास में कई जगहों पर लेखक ने कथोपकथनों में भावात्मकता ला दी है जिनसेउपन्यास में सरसता आ गयी है। जैसे बर्टी और चन्दर के यह संवाद --

"हाँ, मैं बड़ा अभागा हूँ। मेरा दिमाग कुछ खराब है, देखिए।" कहकर उसने झुककर अपनी खोपड़ी चन्दर के सामने कर दी और बहुत गिड़गिड़ाकर बोला -- "पता नहीं कौन मेरे फूल चुरा ले जाता है। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद पाँच साल से मैं इन फूलों को सँभाल रहा हूँ। हाय रे मैं! जाइए पम्मी बुला रही हैं।"[२]

सुधा और चन्दर के कई ऐसे भावात्मक संवाद हम इस उपन्यास में प्राप्त कर सकते हैं। जैसे --

"सुधा, तुम कभी हम पर विश्वास न हार बैठना।"

सुधा ने किताब बन्द करके रख दी और उठकर बैठ गयी। उसने चन्दर के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा -- "पागल कहीं के। हमें कहते हो अभी सुधा में बचपन है और तुम में क्या है : वाह रे छुईमुई का फूल। किसी ने हाथ पकड़ लिया, किसी ने बदन छू लिया तो घबड़ा गये। तुमसे तो अच्छी लड़कियाँ होती हैं।"[३]

इन सारे गुणों के साथ इस उपन्यास के संवादों में काव्यात्मकता भी है, जैसे --

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. २९०।
२ वही वही पृ. २२।
३ वही वही पृ. १११।

"नहीं जी, एक बार फिर पढ़कर कौन सबक भूलता है और एक बार सबक याद होने के बाद जानती हो इश्क में क्या होता है --

"मकतबे इश्क में इक ढंग निराला देखा
उसको छुट्टी न मिली जिसको सबक याद हुआ ।"

खैर, यह सब बात जाने दे सुधा, अब तू कब ब्याह करेगी ?"

"जल्दी ही करूँगी ।" सुधा बोली ।

"किससे ?"

"तुझसे ।" और दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ी ।" [१]

इस प्रकार पात्रों के चरित्र-चित्रण के मुख्य उद्देश्य को लेकर आये इन कथोपकथनों में नाटकीयता, सरलता होने के कारण पाठक इस में रूचि लेते हैं और आद्यन्त पढ़ने के लिए उत्सुक रहते हैं।

(अ) भाषा --

भाषाशैली उपन्यास का पाँचवा और महत्वपूर्ण तत्व है । उपन्यास साहित्य सृजन के प्राथमिक काल में भाषा का इतना महत्व नहीं था । भाषा के बजाय विषाय-वस्तु को प्रधानता दी जाती थी । आज-कल उपन्यास में भाषा का अपना अलग महत्व है । भाषा के जरिए उपन्यासकार द्वारा पाठकों पर विशेष प्रभाव डाला जा सकता है । लेखक सामान्य, सुलभ भाषाशैली द्वारा चरित्र की विशेषताओंपर प्रकाश डालता है । लेखक विशेष प्रभाव के लिए ही सामान्यत: साहित्यिक भाषा को त्याग बोलचाल की भाषा, अंचल विशेष की भाषा को अपनाता है ।

डा. सुरेश सिन्हा का अपना मत दृष्टव्य है -- "प्रत्येक जीवन, परिवेश को अभिव्यक्त, करने के लिए भाषा का अपना रूप होता है । परिवेश में परिवर्तन

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ३९ ।

के साथ भाषा का स्वरूप नया हो जाता है। परिवर्तन के इन सूत्रों को न पहचान सकना अविवेकपूर्ण दूराग्रह है। जीवन परिवेश के बदल जाने पर भी जब हम उसी भाषा का प्रयोग करते रहते हैं तो विडम्बनाएँ उत्पन्न होती हैं और मामूली-सा कथ्य भी अविश्वसनीय या चौंकानेवाला बन जाता है और वह हमसे कोई रिश्ता जोड़ नहीं पाता। कथ्य जितना ही प्रामाणिक होगा भाषा उतनी ही सहज होगी।" [१]

आलोच्य उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में धर्मवीर भारती जी ने सरल, सरस और प्रवाहशील भाषा को अपनाया है, परंतु "किसी भाषा के वर्तमान सैध्दांतिक और व्यावहारिक रूपों का शास्त्रीय नियंत्रण उसके व्याकरण द्वारा ही होता है।" [२] प्रतापनारायण टण्डन के इस वक्तव्य से अगर हम 'गुनाहों का देवता' की जाँच करना चाहे तो भाषा के विविध रूपों का हमें पहले अध्ययन करना पड़ेगा फिर 'गुनाहों का देवता' इस उपन्यास की भाषाशैली की जाँच करनी पड़ेगी।

(१) शब्दप्रयोग के रूप ---

शब्द भाषा की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। उपन्यासकार अपने उपन्यास की भाषा को सुन्दर, सहज बनाने के लिए शब्दों के कई रूपों का प्रयोग करता है, जैसे --

(अ) तत्सम शब्द -

किसी भाषा का विशेषतः संस्कृत के वह शब्द जिनका प्रयोग या व्यवहार दूसरी या देशी भाषाओं में उसके मूल रूप में ज्यों का त्यों हो। 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में निम्नलिखित तत्सम शब्द आये हैं - ग्राम, उपनगर, वक्ष, पुत्री, मातृत्व, क्षीरसागर, अमृत, क्षितिज, निष्पाप, कृतज्ञ, महाभिनिष्क्रमण, संकल्प, आकाश, जन्म, आत्मा, क्रोध, स्वर्गकुंज, वक्त, कलाकार, मुद्रा आदि।

---

१ डा. सुरेश सिन्हा -'हिंदी उपन्यास'- पृ. ३९१-३९२।

२ डा. प्रतापनारायण टण्डन -'हिंदी उपन्यास कला'- पृ. २३५।

(आ) तद्भव शब्द --

भाषा में प्रयुक्त होनेवाला संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप कुछ विकृत अथवा परिवर्तित हो गया हो । जैसे - अपसगुन, पिरथी, अरथ, जलम, परधान, मूरख, परसन्न, मुटकी, मुटानी, रोवाई, काहे आदि ।

(इ) अंग्रेजी शब्द -

रोमॅन्टिक, नैस्टर्शीयम, लाइब्रेरी, स्टेशन, मेम्बर, कम्पाउन्ड, साइलेन्स, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, गवर्नमेन्ट, पॉलिटिक्स, टैंक, सॉनेट, प्राइवेट, कनस्टर, कॉन्वोकेशन, रजिस्टर, ऑफर आदि कई अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग 'गुनाहों का देवता' में हुआ है ।

(ई) अरबी शब्द -

वाकिफ़, अफ़सर, तलाक, नफ़रत, आफ़त, कलम, इन्तजार, खालिस, जनाब, मंजिल, मोहताज़, लायक, इज्जत, कुरबान, तकलीफ़, तोहफ़ा, मुकाबला आदि अरबी शब्दों का प्रयोग इस उपन्यास में हुआ है ।

(उ) फ़ारसी शब्द -

गलतफ़हमी, खामोश, जिन्दगी, जिगर, तश्तरियाँ, दामन, दरिया, लापरवाही, निगाह, पुरजे, होश, सायबान, हरगिज, मेहरबान, बदतमीजी, अख्तियार, खुशनुमा आदि फ़ारसी शब्दों का प्रयोग भारती जी ने इस उपन्यास में किया है ।

(ऊ) उर्दू शब्द -

अंजलि, कफ़न, दिक्कत, खुराफ़ातें, आदाब, जादूगर, आहिस्ते, गुमराह, गुसलखाना, गुस्ताखी, आदमी, दोशीजा आदि उर्दू शब्द भी इसमें प्रयुक्त हुए हैं ।

(ए) द्विरुक्त शब्द -

सुबह-सुबह, चलते-चलते, छोटे-छोटे, ऊँचे-ऊँचे, चुपके-चुपके, पीछे-पीछे, चूर-चूर, सोचते-सोचते, हँसते-हँसते, तिल-तिल, पीते-पीते, पड़ा-पड़ा, जाते-जाते, धीरे-धीरे आदि ।

(ऐ) निरर्थक शब्द -

गोल-मटोल, घर-बार, जात-पाँत, घर-भर, चाय-वाय, ऐरा-गैरा, सरबत-उरबत, अच्छा-वच्छा, भरे-पूरे, मुहब्बत - सुहब्बत, कविता-उबिता, प्यार-ब्यार, एहर-ओहर, झक्की, टुप्प से, सोरवा, टुइयाँ, आदि ।

(ओ) अपशब्द -

कुलबोरनी, कुलच्छनी, मुँहझौंसी, जूता-पिटऊ, बड़नक्कू, गोरा सुअर आदि ।

इन सभी शब्दों के रूपों से उपन्यास की भाषा सहज, सुन्दर बन गई है ।

(२) भाषा के रूप ---

आलोच्य उपन्यास में भाषा के कई रूप देखने को मिलते है जैसे ---

(१) वर्णनात्मक भाषा -

अ - "यह दुबली-पतली, लम्बी-सी नाजुक कली जो बहुत सावधानी से हरा आँचल लपेटे है और प्रथम ज्ञात यौवना की तरह लाज में जो सिमटी तो सिमटी ही चली जा रही है, लेकिन जिसके यौवन की गुलाबी लपटें सात हरे परदों में से झलकी ही पड़ती है, छलकी ही पड़ती है ।"[१]

आ - "खुशबू से लदे हल्के - हल्के झोंके गेसू की ओढ़नी और गरारें की सिलवटों से आँखमिचौनी खेल रहे थे ।"[२]

(२) उपदेशात्मक भाषा -

अ - "बस यहाँ तो एक मिनट बैठना बुरा लगता है आप को ! हम कहते है कि, नाश्ते और खाने के वक्त आदमी को जल्दी नहीं करना चाहिए । बैठिए न !"[३]

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. १९ ।

२ वही वही पृ. ३७ ।

३ वही वही पृ. १४ ।

आ - "..... तुम्हारी तो शादी अभी नहीं हुई ?"

"नहीं ।"

"बहुत ठीक, तुम चौंतीस बरस के पहले शादी मत करना ।" [१]

(३) व्यंग्यात्मक भाषा -

अ - "नहीं ।" चिढ़ाते हुए सुधा बोली - "तुम कहो तुम्हें समझा दें । इकनॉमिक्स पढ़नेवाले क्या जानें साहित्य ?" [२]

आ - "हाँ, हाँ, छुओ मत । कहीं इनकी सैण्डिल भी बाद में आके न रोने लगे ।" [३]

(४) पात्रानुकूल भाषा -

अ - "बिलकुल जरूरी ।" डा. शुक्ला बोले - "मुझे भी हिन्दोस्तान पर गर्व है । मैंने कभी कांग्रेस का काम किया, लेकिन मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि, जरा सी आजादी अगर मिलती है हिन्दोस्तानियों को, तो वे उसका भरपूर दुरुपयोग करने से बाज़ नहीं आते और कभी ये लोग अच्छे शासक नहीं निकलेंगे ।" [४]

आ - दुबे जी ने उठकर बैठने की कोशिश की लेकिन असफल होकर लेटे - ही लेटे कहा - "हो, हो ! सब आप की कृपा है । खूब छक के मिष्टान्न पाया । अब जरा सरबत - उरबत कुछ मिले तो जो कुछ पेट में जलन है, सो शान्त होय ।" [५]

(५) आवेशात्मक भाषा -

अ - "क्या मतलब है तुम्हारा ! पागल है क्या ! खबरदार जो हाथ बढ़ाया, अभी ढेर कर दूँगा तुझे ! गोरा सुअर ?" [६]

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.७५ ।
२ वही वही पृ.८ ।
३ वही वही पृ.११३ ।
४ वही वही पृ.५२ ।
५ वही वही पृ.८९ ।
६ वही वही पृ.२० ।

आ - "हाँ, इस बात पर इतनी नाराज है। तुम आओ चाहे हजार बार न आओ। इस पर हम क्यों नाराज होंगे। बड़े कहीं के आये, नहीं आयेंगे तो जैसा हमारा घर-बार नहीं है। अपने को जाने क्या समझा लिया है।" [१]

(६) गंभीरता से युक्त भाषा -

अ - "देखो, तुम मुझसे इलम में ऊँची हो, तुमने अंगरेजी शायरी छान डाली है लेकिन जिन्दगी से जितना साबिका मुझे पड़ चुका है, अभी तुम्हें नहीं पड़ा। अकसर कब, कहाँ और कैसे मन अपने को हार बैठता है, यह खुद हमें पता नहीं लगता।" [२]

आ - "एक बार तो ऐसा हुआ कि, पर्चे में एक करुण-रस का गीत आ गया अर्थ लिखने को। मैं उसे पढ़ते ही इतना व्यथीत हो गया कि, उठकर टहलने लगा। प्रोफेसर, समझे मैं दूसरे लड़के की कापी देखने उठा हूँ। तो उन्होंने निकाल दिया। मुझे निकाले जाने का अफसोस नहीं हुआ लेकिन कविता पढ़कर मुझे बहुत रुलाई आयी।" [३]

(७) भावुक भाषा -

अ - "कितना जुल्म है, कितना जुल्म है। मेरे फूल भी तुम चुरा ले गये और मुझे इतना हक भी नहीं कि, तुम्हें धमकाऊँ। अब तुम मुझसे लड़ोगे। तुम जवान हो, मैं बूढ़ा हूँ।" [४]

आ - "नहीं दिनभर पढ़ने के बाद उठी थी, उसके भी सिर में दर्द था, चली गयी। घूम फिर लेने दो बेचारी को अब तो जा रही है।" डाक्टर शुक्ला बोले, एक ऐसी हँसी के साथ जिसमें आँसू छलके पड़ते थे।" [५]

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. ४४।
२ वही वही पृ. ५९।
३ वही वही पृ. ११९।
४ वही वही पृ. २०।
५ वही वही पृ. ८८।

(८) प्रतीकात्मक भाषा -

अ - "सुधा के गाल पर दो बड़े बड़े मोती ढ़लक आये ।" [१]

आ - "कमर में एक अँगोछे के अलावा सारा शरीर दिगम्बर ।" [२]

(९) ग्राम्य भाषा -

अ - "अच्छा ए चलो ओहर । महाराजिन ने हाँटकर कहा - एत्ती बड़ी बिटिया हो गयी, मारे दुलार के बररानी जात हैं ।" [३]

आ - "फिर यही ठीक होई । बिनती का बियाह टाल देव और अगर ई लड़का ठीक हुइ जाय तो सुधा का बियाह अषाढ़-भर में निपटाय देव ।" [४]

इस प्रकार हम देखते है कि, भारती जी ने इस उपन्यास में भाषा के कई रूपों का प्रयोग किया है जिससे भाषा में सहजता, सुन्दरता और स्वाभाविकता आ गई है ।

(३) भाषा सौन्दर्य के साधन --

इसमें भाषा के सौन्दर्य को बढ़ानेवाली बातें आ जाती है । जैसे - विशेषण, रूपक, उपमान, शब्द शक्तियाँ, प्रतीक, बिम्ब, मुहावरें और कहावतें, सुक्तियाँ, वाक्य विश्लेषण आदि ।

धर्मवीर भारती जी के उपन्यास में कुछ प्रमुख साधन सार्थकता से प्रयुक्त हुए हैं । लेखक ने अपनी अभिव्यक्ति को अधिक आकर्षक बनाने के लिए कहीं-कहीं पर अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है । जिसमें रूपक, उपमा आदि अलंकारों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान की है । जैसे ---

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ. ६३ ।
२ वही वही पृ. ८९ ।
३ वही वही पृ. ५५ ।
४ वही वही पृ. ८६ ।

(१) विशेषण -

पतली गलियाँ, खुशनुमा सुबह, चौड़ी सड़के, बरफ़ीली उँगलियाँ, फ़िकी हँसी, सुनहली रोशनी, साफ दिल, मीठी आवाज, खूँखार, जानवर पवित्र सितारें आदि ।

(२) रूपक -

अ - "बसंत के नये नये मौसमी फूलों के रंग से मुकाबला करनेवाली हल्की सुनहली, बाल-सूर्य कीअँगुलियाँ सुबह की राजकुमारी के गुलाबी वक्षपर बिखरे हुए भौंराले गेसुओं को धीरे-धीरे हटाती जाती है और क्षितिज पर सुनहली तरूनाई बिखर पड़ती है ।" १

आ - "कातिक पूनो की चाँद-से झरनेवाले अमृत को पीने के लिए व्याकुल किसी सुकुमार भावुक परी की फैली हुई अंजलि के बराबर बड़ा-सा वह फूल जैसे रोशनी बिखेर रहा था ।" २

इ - "बादल हलके होकर खरगोश के मासूम स्वच्छंद बच्चों की तरह दौड़ रहे थे ।" ३

(३) उपमान -

खामोशी के फरिश्ते की छाँह, सितारों का गुलदस्ता, घर चमक उठा था जैसे रेशम, वह ऐसी भागी जैसे छलकती हुई चाय, उसका मुँह ग्रहण के चंद्रमा की तरह निस्तेज था ।

(४) कहावतें और मुहावरें --

पौ फटना, हाथ नचाना, मुँह मटकाना, पानी-पानी होना, चूर-चूर होना, फूट-फूटकर रो पड़ना, रत्तीभर परवाह न करना, उधम मचाना, दिमाग घूम जाना, निगाहें गड़ाना, तुमार बाँधना, झाल्ला आना, जान आधी कर देना आदि ।

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. २ ।

२ वही वही पृ. १९ ।

३ वही वही पृ. ३७ ।

(५) सुक्तियाँ -

अ - "बहलावे के लिए मुस्कानें ही जरूरी नहीं होती, शायद आँसुओं से मन जल्दी बहल जाता है।" [१]

आ - "चाँद कितनी ही कोशिश क्यों न करे, वह रात को दिन नहीं बना सकता।" [२]

इ - "अविश्वास आदमी की प्रवृत्तियों को जितना बिगाड़ता है, विश्वास आदमी को उतना ही बनाता है।" [३]

ई - "जब भावना और सौन्दर्य के उपासक को बुध्दि और वास्तविकता की ठेस लगती है तब वह सहसा कटुता और व्यंग्य से उबल उठता है।" [४]

संक्षेप में, 'गुनहों का देवता' उपन्यास की भाषा काव्यमय है, रोचक है तथा पात्रों की मानसिक दशाओं का अंकन करने में पूर्णत: सक्षम है। भाषा पात्रों की शिक्षा, सांस्कृतिक स्तर के अनुरूप है। जिस देशकाल का वर्णन किया है उस प्रदेश एवं स्थान तथा काल की भाषा है। भाषा से लेखक की बौध्दिकता का पता लगता है।

(ब) शैली -

आरम्भिक काल में खण्डगत शैली के रूप में ही उपन्यास लिखे जाते थे। तृतीय पुरुष के रूप में वर्णनात्मक शैली ही प्राय: उपन्यास के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित थी। आधुनिक काल में इसी शैली से अन्य भी शैलियाँ निर्माण हो चुकी हैं।

प्रथम पुरुष में कोई बात कही जा सकती है, जो उपन्यास में भी आत्मकथात्मक शैली के रूप में उनका प्रयोग हो सकता है। इस प्रकार द्वितीय, तृतीय पुरुषों के रूप में जो विवरण दिये जा सकते है, उन्हीं को माध्यम और अन्य पुरुषों

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. १९६।
२ वही वही पृ. १९७।
३ वही वही पृ. २०१।
४ वही वही पृ. २३२।

की ओर से विवरणात्मक शैली में प्रस्तुत किया जा सकता है। कहने का आशय यह है कि, वर्णनतत्व के जितने भी रूप होते है, उपन्यास की उतनी शैलियाँ हो सकती है।" [१]

उपन्यास लिखने की कई शैलियाँ पायी जा चुकी हैं। इसमें निम्नलिखित शैलियों को सामने रखकर हम 'गुनाहों का देवता' की आख्यानशैली का विश्लेषण करेंगे।

वर्णनात्मक शैली --

उपन्यासकार इस शैली के माध्यम से निर्लिप्त भाव से वर्णन करता चला जाता है। इस शैली के माध्यम से चरित्र-चित्रण के सफलता की आशा भी हम कर सकते हैं। यहाँ उपन्यासकार एक सर्वज्ञ की भाँति हमारे सम्मुख आ जाता है। जैसे भारती जी ने इलाहबाद शहर का वर्णन इस प्रकार किया है -- "बनारस की गलियों से भी पतली गलियाँ और लखनऊ की सड़कों से भी चौड़ी सड़कें। यार्कशायर और ब्राइटन के उपनगरों का मुकाबला करनेवाली सिविल लाइन्स और दलदलों की गन्दगी को मात करनेवाले मुहल्ले।" [२]

इसके साथ ही प्रकृति - चित्रण में, चन्दर के चार्ट बनाने की व्यस्तता में भी और सुधा का वर्णन करने में भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। चन्दर की व्यस्तता के बारे में लेखक ने लिखा है -- "बाहर से इतना व्यक्तिवादी और सारी दुनिया के प्रति निरपेक्ष और लापरवाह दीख पड़नेपर भी वह अन्तरतम से समाज और युग और अपने आसपास के जीवन और व्यक्तियों के प्रति अपने को बेहद उत्तरदायी अनुभव करता था।" [३]

---

१ डा. प्रतापनारायण टण्डन -'हिंदी उपन्यास कला' - पृ. २५७।

२ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' - पृ. १७।

३ वही वही पृ. ४९।

विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक शैली --

इस शैली के जरिए उपन्यासकार सिर्फ वे ब्यौरे देता है जिनकी पाठकों की दृष्टि से अत्यंत आवश्यकता होती है। उपन्यासकार तटस्थ रहकर उन बातों का विवरण देता है या विश्लेषण करता चला जाता है जिससे पाठकों को उन घटनाओं या पात्रों के चरित्र की जानकारी प्राप्त होती है। भारती जी ने भी इसी शैली का कई जगहोंपर प्रयोग किया है।

"और यह नन्हीं दुबली-पतली, चन्द्रकिरन-सी सुधा। जब आज से वर्षों पहले यह सातवाँ पास करके अपनी बुआ के पास से यहाँ आयी थी तब से लेकर आज तक कैसे वह भी चन्दर की अपनी होती गयी, इसे चन्दर खुद नहीं जानता।" १

"अपने व्यक्तिगत जीवन में डा. शुक्ला अन्तर्विरोधों के व्यक्ति थे। पार्टियों में मुसलमानों और इसाइयों के साथ खाने में उन्हें कोई एतराज नहीं था लेकिन कच्चा खाना वे चौके में आसनपर बैठकर रेशमी धोती पहनकर खाते थे।" २

पत्रात्मक शैली --

पूरे के पूरे उपन्यास को भी इसी शैली में आधुनिक काल में लिखा जाता है परंतु भारती जी ने पत्रशैली का प्रयोग अपने उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में कर दिया है।

जैसे - सुधा को चंदर का यह खत -

"प्रिय सुधा,

तुम्हारा पत्र बहुत दिनों के बाद मिला। तुम्हारी भाषा वहाँ जाकर बहुत निखर गयी है। मैं तो समझता हूँ कि, अगर खत कहीं छपा दिया जाये तो लोग इसे रोमाण्टिक उपन्यास का अंश समझें, क्योंकि उपन्यासों के ही पत्र ऐसे खत लिखते है, वास्तविक जीवन के नहीं।

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहोंका देवता'- पृ. १०।

२ वही वही पृ. ४६।

खैर, मैं अच्छा हूँ। हरेक आदमी जिन्दगी से समझौता कर लेता है किन्तु मैंने जिन्दगी से समर्पण कराकर उससे हथियार रखा लिये हैं। अब किले के बाहर से आनेवाली आवाजें अच्छी नहीं लगतीं, न खतों के पाने की उत्सुकता न जवाब लिखने का आग्रह। अगर मुझे अकेला छोड़ दो तो बहुत अच्छा होगा। मैं बिनती करता हूँ मुझे खत मत लिखना - आज बिनती करता हूँ क्योंकि आज्ञा देने का अब साहस भी नहीं, अधिकार भी नहीं, व्यक्तित्व भी नहीं। खत तुम्हारा तुम्हें भेज रहा हूँ।

कभी जिन्दगी में कोई जरूरत आ पड़े तो जरूर याद करना - बस इसके अलावा कुछ नहीं।

अपने में संतुष्ट

चन्द्रकुमार कपूर"[१]

इसी खत से चंद्रकुमार के दिल की उथल-पुथल का पता हमें चलता है। इसके साथ ही पम्मी, सुधा और बिनती ने चन्दर को खत लिखे हैं।

नाटकीय शैली -

कथोपकथन में नाटकीयता होना या नाटकीय भाषा शैली का इस्तमाल उपन्यासकार व्दारा होना उपन्यास को रोचक, सहज, स्वाभाविक, सरस बना देता है और भारती जी के पूरे उपन्यास में कई जगहोंपर नाटकीय शैली का प्रयोग किया गया है। जैसे -- चन्दर और सुधा का संवाद --

"क्यों, पीते क्यों नहीं ?" सुधा ने अपना प्याला रख दिया।

"पीयें क्या ? कहीं चाय भी हो ?"

"तो और क्या खालिस चाय पीजिएगा ? दिमागी काम करनेवालों को ऐसी ही चाय पीनी चाहिए!"

"तो अब मुझे सोचना पड़ेगा कि, मैं चाय छोड़ूँ या रिसर्च। न ऐसी चाय मुझे पसंद, न ऐसा दिमागी काम।"[२]

---

१ डा. धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता' - पृ. २४०।

२ वही वही पृ. १३-१४।

इसके साथ ही बिसरिया का बिनती को अपना काव्य संग्रह अर्पण करना, सुधा का ससुराल जाना, सुधा और गेसू का कॉलेज जीवन इन सभी में नाटकीय शैली के दर्शन हमें हो जाते हैं।

काव्यात्मक या भावात्मक शैली --

उपन्यास को प्रभावात्मक बनाने के लिए काव्यात्मक या भावात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इससे उपन्यास में सरसता, रोचकता, निर्माण होती हैं। 'गुनाहों का देवता' में भारती जी ने इस शैली का भी प्रयोग अपने उपन्यास में कई जगहोंपर किया है जिससे कि, सहृदय व्यक्ति थोडा और भावुक बन जाता है। जैसे - सुधा और गेसू के कॉलेज के दिनों में गेसू का शेरों-शायरी छेड़ना और हरदम सपनों में खोना वहाँ एक काव्यात्मक वातावरण बिखेर देता है।

"लो तुम मजाक समझती हो, एक शायर ने, तुम्हारी अँगड़ाई के लिए कहा है --

कौन ये ले रहा है अंगड़ाई।
आस्मानों को नींद आती है।"

"वाह!" सुधा बोली।" [१]

सुधा और चन्दर के निम्नलिखित संवाद में भी हम भावात्मक शैली देख सकते हैं --

"नहीं सुधी तुम नहीं समझती। मेरी जिन्दगी में एक ही विश्वास की चट्टान है और वह हो तुम। मैं जानता हूँ कि, कितने ही जल-प्रलय हो लेकिन तुम्हारे सहारे मैं हमेशा ऊपर रहूँगा।" [२]

इसी प्रकार सुधा की शादी तय हो जानेपर चन्दर और सुधा के संवादों, बिनती और चंदर के संवादों तथा बर्टी और चन्दर के संवादों में भी हम इस शैली को देख सकते हैं।

---

१ डा. धर्मवीर भारती --"गुनाहों का देवता '- पृ. ४७।

२ वही वही पृ. १३-१४।

आँचलिक शैली ---

लेखक के व्दारा उपन्यास में चित्रित घटनाओं से सम्बध्द प्रदेश-विशेष का चित्रण आँचलिक शैली में होता है । 'गुनाहों का देवता' में आँचल का इतना वर्णन नहीं आया है । पहले ही पन्ने पर उपन्यासकार ने इलाहबाद का जो वर्णन किया है, उतना ही वर्णन प्रदेश-विशेष का आ गया है । बुआ जी के कारण थोडी-सी ग्रामिण संस्कृति की भी झलक देखने को मिलती है । गाँव के रहन-सहन, विचार, संस्कृति आदि का चित्रण हमें बुआजी के परिचय के साथ ही हो जाता है । गाँव की बोली का प्रयोग बुआजी, महाराजिन आदि के माध्यम से किया है । जैसे -- पाँच का नोट देखा तो बुआ जी सुलग उठीं - "न गहना न गुरिया, बियाह पक्का कर गये ई कागज के टुकड़े से ।" १

मनोविश्लेषणात्मक शैली --

आधुनिक उपन्यासों में यह एक नई शैली निर्माण हो गई है । भारती जी ने भी अपने पात्रों के मानसिक व्दन्द्व आदि को चित्रित करने के लिए इस शैली का प्रयोग अपने उपन्यास में किया है । भावना और वासना के अंत:संघर्ष को उभारने के लिए अधिकतर इस शैली का प्रयोग आलोच्य उपन्यास में किया गया है । बर्टी का चरित्र कई मनोवैज्ञानिक तथ्यों की व्यंजना करता है । बर्टी का मनोव्यापार इतना आगे बढ़ जाता है कि, शादी और प्रेम के बारे में विचार इस तरह से हो जाते है --

"तुम प्रेम तो जरूर करते होंगे ... न, सिर मत हिलाओ.... मैं यकीन नही कर सकता । ... मैं इतनी सलाह तुम्हें दे रहा हूँ कि, अगर तुम किसी लड़की से प्रेम करते हो तो ईश्वर के वास्ते उससे शादी मत करना - तुम मेरा किस्सा सुन चुके हो ।" २

आत्मसंवाद भी मनोविश्लेषण में सहायक होता है । जैसे - चंदर आइने के सामने खड़ा है और उसी के प्रतिबिंब के साथ लड़ रहा है ---

---

१ डा. धर्मवीर भारती - 'गुनाहों का देवता' - पृ. ९९ ।

२ वही वही पृ. २१३ ।

"तू ने सुधा के स्नेह का निषेध कर दिया । तू ने बिनती की श्रध्दा का तिरस्कार किया । तू ने पम्मी की पवित्रता भ्रष्ट की... और इसे अपनी साधना समझाता है ? तू याद कर,कहाँ था तू एक वर्ष पहले और अब कहाँ है ?"[१]

इस प्रकार अन्य भी कई जगहोंपर पात्रों का मनोविश्लेषण करने में लेखक सफल हुए हैं ।

चेतना प्रवाह शैली ---

आधुनिक काल में प्रयुक्त होनेवाली इस शैली का परिचय हमें भारती जी के इस उपन्यास में भी देखने को मिलता है । सुधा के अंतिम समयपर सन्निपात में उसका बड़बड़ाना इसी शैली का उदाहरण है --

बिनती ने रोते हुए सुधा के माथे में चरण-धूलि लगा दी -
"रोती क्यों है पगली ! मैं मर जाऊँ तो चन्दर तो है ही । अब चन्दर तुझे कभी नहीं रुलायेंगे ।.... चाहे पूछ लो । इधर आओ चन्दर ! बैठ जाओ,अपना हाथ मेरे होठोंपर रख दो... ऐसे ... अगर मैं मर जाऊँ तो रोना मत चंदर !"[२]

इस प्रकार हम देखते हैं कि,इस उपन्यास में सभी प्रकार की भाषा शैलियों का प्रयोग उपन्यास कार ने किया है । इसकी भाषा के बारे में कैलाश जोशी ने लिखा है --

"इसमें लेखक की अंतरात्मा का स्वर प्रणय की ताल और लय के साथ प्रतिध्वनित हुआ है । लेखक तो इष्ट भाव की चर्वणा अपेक्षित है,जिसके लिए भारती ने बाह्य परिवेश का सहारा लिया है । भारती की भाषा में भाव इस प्रकार झलकते हैं जिस प्रकार अंगुर के दानों में रस साफ-साफ झलकता हुआ दिखाई देता हैं । सायास कठिन शब्दों के प्रयोग भारती जी ने नहीं किया है,वाणी उसकी जिव्हापर नर्तित है,वाणी को वह जो भंगिमा देना चाहता है,बड़ी सहजता से दे देता है ।"[३]

---

१ डा.धर्मवीर भारती -'गुनाहों का देवता'- पृ.२९२ ।

२ वही वही पृ.३४८ ।

३ डा.कैलाश जोशी -'धर्मवीर भारती : उपन्यास साहित्य'- पृ.४८ ।

निष्कर्ष :

'गुनाहों का देवता' के संवादों के बारें में हम कह सकते हैं कि,भारती जी ने जिन संवादों का प्रयोग इस उपन्यास में किया है उसके पीछे कथानक को गतिशील बनाना,कथानक में रोचकता,सरसता लाना आदि उद्देश्य रहे है। स्वाभाविकता, उपयुक्तता,संक्षिप्तता,उद्देश्यपूर्णता,सम्बध्दता,पात्रानुकूलता,मनोवैज्ञानिकता, भावात्मकता आदि गुणों से युक्त ये संवाद सीधे,सरल,चुटीले,रंजक,काव्यात्मक, नाटकीय बन पडे हैं। भारती जी ने जिन संवादोंका चयन किया है वे इन्हीं गुणों के कारण सफल बन गये हैं। अगर भाषा शैली के बारे में सोचा जाय तो भारती जी ने इस उपन्यास में कई प्रकार के शब्द ,भाषा के कई रूप और भाषा को सौन्दर्य प्रदान करनेवाले कई साधनों का प्रयोग करते हुए आठ शैलियों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

श्रीमती पुष्पा वास्कर ने इस उपन्यास की आलोचना करते हुए लिखा है,"'गुनाहों का देवता' उपन्यास में लगभग सभी शैलियों का प्रयोग किया गया है फिर भी यह शिल्पप्रधान उपन्यास नहीं है।" [१]

श्रीमती पुष्पा वास्कर एक ओर तो कहती हैं कि, 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में लगभग सभी शैलियों का प्रयोग किया गया है और दूसरी ओर कहती है,यह शिल्पप्रधान उपन्यास नहीं है जो कि, अनुचित लगता है,अर्थात सभी प्रकार की शैलियों का प्रयोग होने मात्र से उपन्यास को शिल्पप्रधान नहीं कहा जाएगा, उसमें अन्य तत्वों का भी समावेश होना आवश्यक है। इस उपन्यास में मुझे सभी तत्व पाये गये हैं, अत: 'गुनाहों का देवता' की शिल्पवैधानिकता नि:संदिग्ध है। मैनें उपन्यास का पूरा अध्ययन किया है और कथानुबन्धन,तत्सम्बन्धी चरित्रांकन, नव्य शिल्प एवं विश्लेषणगत सुनियोजन,भाषाशैली के जिन रूपों को,जिन प्रकारों को एवं उनके उदाहरणों को इस उपन्यास में पाया है,उसी को मद्दे नजर रखते हुए मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि निश्चितत: यह उपन्यास शिल्पप्रधान है।

---

१ डॉ.पुष्पा वास्कर -'धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'- पृ.१४३।